# महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा
(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)


# महर्षि-प्रभा

द्वि-मासिक ई-पत्रिका


अंक - १३ माह- मार्च से मई वर्ष २०२३ विक्रमी संवत् २०७९-८०


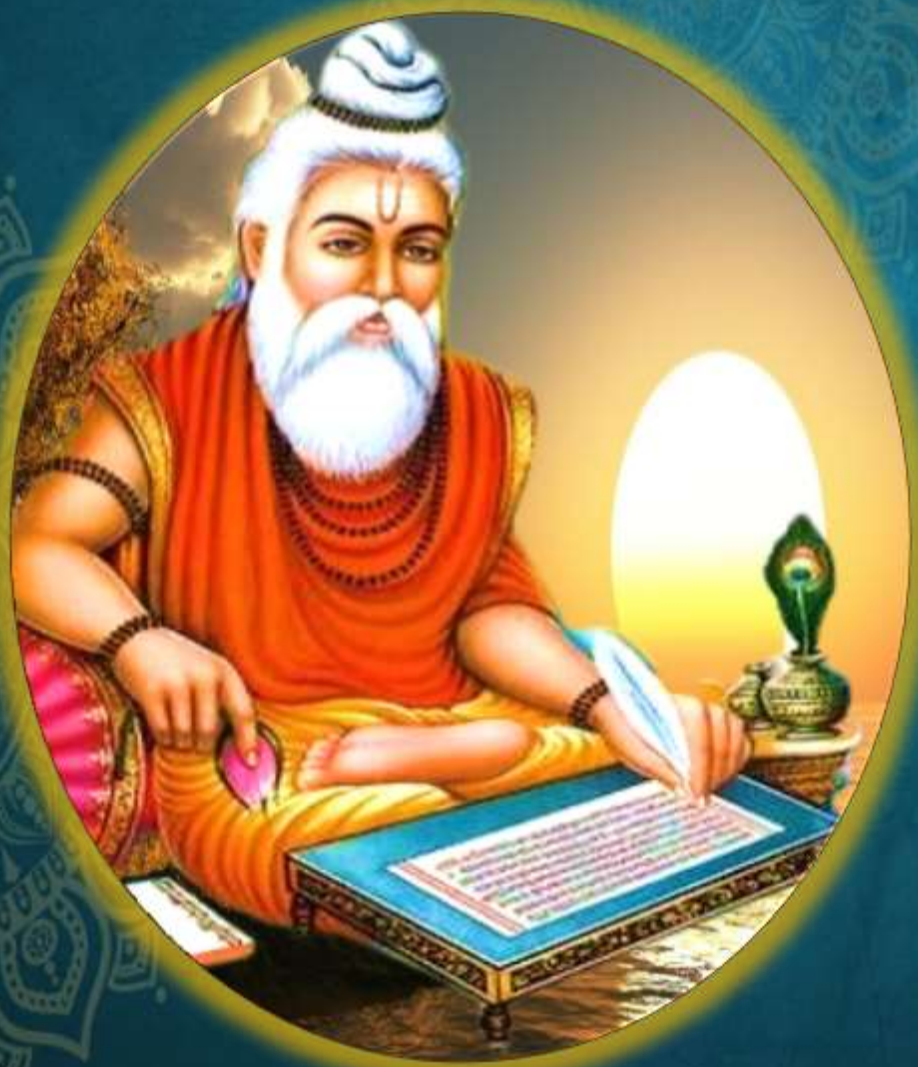


**संरक्षक**

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री मूलचंद शर्मा
(माननीय शिक्षा मंत्री)

**मार्गदर्शक**

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद्, हरियाणा)

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

**सम्पादक**

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

**सहसम्पादक**

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. गोविन्द बल्लभ
डॉ. शर्मिला

**छात्र सम्पादिका**

रजनी


वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ।।


ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

## सम्पादकीयम्

विज्ञापते यत् भारतदेशः प्राचीनकालादेव विश्वस्य मार्गदर्शनं करोति। सम्प्रति योग-आयुर्वेद-स्थापत्यादयः विषयाः वैश्विकस्तरे ख्यातिं प्राप्नुवन्ति । सम्पूर्णविश्वे योगदिवसः सोत्साहेन आयोज्यते । कोरोनाकाले भारतीयायुर्वेदस्य प्रभावः उपयोगिता अपि समाजे प्रतिष्ठापितम् अभवत् । न केवलं योगायुर्वेदादयः विषयाः प्रसिद्धाः अपितु प्राचीनकाले भारतदेशेन सम्पूर्णविश्वं प्रति चरित्र-आचरणस्य अपि शिक्षा प्रदत्ता। उक्तञ्च यत्-

**एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाऽग्रजन्मनः।**
**स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥**

भारतदेशे शिक्षाग्रहणार्थं नैकाः वैदेशिकाः जना आगतवन्तः । अत्र आगत्य भ्रमणं कृतवन्तः तथा च भारतदेशस्य ज्ञान-विज्ञानसम्पदायाः विशद वर्णनं तैः स्वकीयेषु ग्रन्थेषु कृतम्। अनेन ज्ञायते यत् प्राचीनकाले अपि भारतस्य सार्वभौमिकी सार्वकालिकी, सर्वग्राही च वैदिकसंस्कृतिः विश्वविख्याता आसीत् । धर्म-संस्कृति-परम्परा-कला-स्थापत्य-भूगोल-खगोल-गणित-रसायन-कृषि-पर्यावरण-अर्थशास्त्र-समाजविज्ञान-इत्याधारिताः नैकाः विषयाः भारतदेशे काशी-तक्षशिला-नालंदा-विक्रमशिला-वल्लभी-ओदन्तपुरी-मिथिला-प्रयाग-काशी-अयोध्या क्षेत्रेषु स्थितेषु शिक्षाकेन्द्रेषु प्रचलिताः आसन्। वैदेशिक-आक्रान्ताभिः भारतीय ज्ञान विज्ञानस्य उज्ज्वल परम्परायाः वटवृक्षः उत्पादितः। अनेन भारतीय समृद्ध शिक्षा परम्परायाः वृक्षः शुष्कः जातः अधुना कालः आयातः यत् अस्माकं समृद्ध परम्परायाः पुनः प्रतिष्ठायना भवेत् । इति विचार्य व सुधी जनानां मध्ये शोधकार्यं प्रशिक्षणञ्च अतीव महत्वपूर्णं वर्तते । भारत-आधारितेन शिक्षाव्यावस्थामाध्यमेन एव भारतदेशः पुनः विश्वगुरुपदवीं प्राप्तुं शक्यते इति । महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः अपि एतस्य कृते प्रयत्मानो वर्तते।

**सम्पादक**

## त्रिदिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास एवं भारतीय सामाजिक अनुसन्धान परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में **"भारतीय ज्ञान परम्परा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2023 के परिप्रेक्ष्य में"** विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह दिनांक 5 मई 2023 को विश्वविद्यालय के टीक परिसर में सम्पन्न हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के महासचिव मा.श्री अतुल कोठारी, अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी रहे। इस अवसर पर भाषा अकादमी हरियाणा के उपाध्यक्ष प्रो. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री श्री जगराम, न्यास के पर्यावरण संयोयक श्री संजय स्वामी, दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रो.बी.के जैन, डॉ मीनाक्षी, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. राधेश्याम शर्मा, संस्कृत भारती के श्री नरेन्द्र कुमार भी उपस्थित रहे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस में तीन सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में अध्यक्ष प्रो. सुज्ञान कुमार माहंति (नाट्यशास्त्र विभाग), केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर ने "भारत की वैज्ञानिक परम्परा का इतिहास एवं भारतीय तकनीकि ज्ञान" विषय पर विमर्श हुआ। द्वितीय सत्र में श्यामदेव मिश्र (ज्योतिष विभाग), केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जम्मू परिसर ने "भारतीय खगोल विज्ञान एवं प्राचीन भूगोल विज्ञान" विषय पर विमर्श किया। सत्र की अध्यक्ष प्रो.पी.बी.सुब्रह्मण्यम् (निदेशक, रघुनाथ कीर्ति परिसर), देवप्रयाग ने कहा कि परम्परागत खगोल विज्ञान के विषयों में इन विषयों का समावेश भी होना चाहिए। इस सत्र में डॉ. शीतांशु त्रिपाठी ने ब्रह्माण्डविज्ञान पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रो. सुन्दर नारायण झा (वेद विभाग) ने भारतीय ज्यामिति, रेखागणित एवं बीजगणित विषयक वैदिक सन्दर्भ प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में मुख्य वक्ता आचार्या डॉ. मीनाक्षी मिश्र (संस्कृत विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय तथा अध्यक्ष आचार्य डॉ. रविन्द्र वशिष्ठ (सेवानिवृत्त), दिल्ली विश्वविद्यालय एवं वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. देव प्रसाद भारद्वाज ने अपने विचार व्यक्त किए। त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में मुख्य अतिथि वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो.बृज किशोर कुठियाला, अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज रहे। तकनीकी सत्रों में मुख्य वक्ता, प्रो. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री, (उपाध्यक्ष), भाषा अकादमी हरियाणा, आचार्य प्रो. पवन शर्मा, (रसायन विभाग), वरिष्ठ शिक्षाविद् डॉ. देव प्रसाद भारद्वाज, श्री जगराम, (उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री) शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, श्री संजय स्वामी (न्यास के पर्यावरण संयोयक), आचार्य डॉ. रविन्द्र वसिष्ठ, (सेवानिवृत्त), आचार्या डॉ मीनाक्षी (संस्कृत विभाग), प्रो. राधेश्याम शर्मा, (पूर्व कुलपति) चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, प्रो. सुजान कुमार महान्ति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल कैम्पस, आचार्य प्रो. सुन्दर नारायण झा, (वेद विभाग), आचार्य प्रो. ओमवीर सिंह, (भूगोल विभाग), प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय (पूर्व कुलपति), प्रो. शिवशंकर मिश्र (शोध विभागाध्यक्ष), प्रो. विभा अग्रवाल (संस्कृत विभागाध्यक्षा), डॉ पुरुषोत्तम, हिमांचल प्रदेश विश्वविद्यालय (बलाहार परिसर), प्रो. रणजीन बहेरा, डॉ आशुतोष दयाल माथुर, सेन्ट स्टीफंस कॉलेज एवं डॉ रामचन्द्र, उपस्थित रहे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो.शत्रुघ्न त्रिपाठी, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के देवप्रयाग परिसर के निदेशक प्रो. पी. बी.सुब्रह्मण्यम्, तथा जम्मू परिसर से प्रो. श्यामदेव मिश्र आनलाइन माध्यम से जुड़े।संगोष्ठी में ऑफलाइन/ऑनलाइन माध्यम से गुजरात, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर एवं बिहार से एक-एक, उत्तर प्रदेश से तीन, राजस्थान से चार, उत्तराखण्ड से पांच, दिल्ली से 11 एवं हरियाणा से 32 प्रतिभागी सम्मिलित रहे। कुल प्रतिभागियों की संख्या 59 रही।

## भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्विदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

20. 21 मार्च 2023 को विश्वविद्यालय के नूतन परिसर टीक में विश्वविद्यालय के भारतीय ज्ञान परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र "सूक्ष्मदिक्साधनं पञ्चाङ्गमण्डनञ्च" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस के कार्यक्रम के पावन अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. सुधीकान्त भारद्वाज, पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा), सारस्वत अतिथि श्री सुरेश शास्त्री (सम्पादक एवं गणितकर्ता, श्री वशिष्ठ पञ्चाङ्ग-कैथल), अध्यक्ष प्रो. रमेश चंद्र भारद्वाज (माननीय कुलपति), संयोजक डॉ. नरेश शर्मा, (विभागाध्यक्ष ज्योतिष विभाग एवं समन्वयक, भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र) रहे।

इस अवसर पर सभी विद्वानों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए तथा संस्कृत भाषा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए संस्कृत को विश्व की सबसे प्राचीन भाषा बताया। ज्योतिष शास्त्र मात्र कल्पित नहीं है यह वैज्ञानिक है। भारतीय ग्रन्थ सांख्यदर्शन के कारण ही संख्या का पता लगता है। त्यौहारों का ज्ञान नक्षत्रों से होता है। ज्यामितिक शास्त्र, शुल्व सूत्रों के अनुसार वेदी का निर्माण करना। वेद के चार सूत्र है- श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र, धर्म सूत्र तथा शुल्व सूत्र। जो विदेशियों की रचना मानी जाती है जैसे -पाईथागोरस, ज्यामिति, त्रिकोणमिति सभी का आधार भारतीय प्राचीन ग्रन्थ शूल्व सूत्रों में वर्णित है।कार्यक्रम के अन्त में अपने अध्यक्षीय भाषण में माननीय कुलपति जी ने भारतीय ज्ञान परम्परा के इतिहास एवं महत्त्व को बताते हुए कहा कि हमेशा से भारतीय ज्ञानियों नें आचार व्यवहार का ज्ञान दुनिया को दिया। हमारी भारतीय विरासतज्ञनमोल है बस उसको समाज के सामने रखने की जरूरत है।

## भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन

कार्यशाला के दूसरे दिन के तीसरे सत्र में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन किया गया है। मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित अशोक सिंघल वैदिक शोध संस्थान गुरूग्राम हरियाणा के निदेशक प्रो. सन्निधान सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि यह विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर है। विधाता ने इस संसार की रचना वेदों को आधार मानकर किया है। मनुष्य पशु पक्षी किट पतंग आदि की रचना के बाद इनकी मुक्ति के लिये धर्म भी बनाया तथा धर्म का प्रारम्भ सत्संकल्प से होता है। अध्यक्ष के रूप में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने कहा कि हमारे भारतीय परम्परा को बचाने तथा प्रचार-प्रसार हेतु विश्वविद्यालय में चार पीठों की स्थापना की वाल्मीकि शोध पीठ, कपिष्ठलसंहिता शोध केन्द्र, सरस्वती वैदिक सभ्यता शोध केन्द्र तथा भारतीय ज्ञान परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र की है।

इस अवसर पर उपस्थित श्री सुरेश शास्त्री (सम्पादक-श्री वशिष्टपंचांग), श्री देवशर्मा, (सम्पादक-कैलाश पंचांग, हिसार), श्री भुपेन्द्रदत्त शास्त्री (सम्पादक, श्री दुर्गादित्य पंचांग), प्रो. पवन शर्मा (रसायन शास्त्र, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय) विद्वानों ने अपने-अपने अनुभव सांझा हुए कहा कि संस्कृत शास्त्रों को पढ़ने का सौभाग्य सबको प्राप्त नही होता है। अतः संस्कृत के विद्यार्थियों को इसे श्रद्धा के साथ पढ़ना चाहिए तथा समाज में इसका प्रचार करना चाहिए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्षगण, आचार्यगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं छात्रगण उपस्थित रहे।

## महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल के छात्रों ने किया आदिबद्री और कपाल मोचन तीर्थ का शैक्षणिक भ्रमण

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के हिन्दू अध्ययन विभाग एवं शोध विभाग के छात्रों ने हरियाणा के प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थल आदिबद्री और कपाल मोचन तीर्थस्थल का भ्रमण किया। आदिबद्री को वैदिक सरस्वती नदी का उद्गम भी माना जाता है। संयोजक एवं हिन्दू अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे ने बताया कि शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम छात्रों के व्यवहारिक ज्ञान के संवर्द्धन एवं राष्ट्र के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों का परिचय प्राप्त करने के लिए शिक्षण का आवश्यक अंग है। शैक्षणिक भ्रमण के अवसर पर आदिबद्री कपाल मोचन श्राईन बोर्ड के सदस्य डॉ. सुभाष गौड ने छात्रों को आदिबद्री एवं कपाल मोचन के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के विषय में विस्तार से परिचय कराया। आदिबद्री सिन्धु सिन्धुवन शिवालिक पर्वत माला में स्थित आदिबद्री नारायण भगवान विष्णु की तपस्थली है। माता मन्त्रा देवी का मन्दिर, श्रीकेदार नाथ शिवालय और सरस्वती का उद्गम स्थल होने के कारण इसका विशेष महत्त्व है। यहां आज भी सरस्वती का जल प्रवाहमान है। यहां सोम और सरस्वती का मिलन होता है। हरियाणा के यमुनानगर जिले में स्थित यह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पर्यटन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं। छात्रों के साथ डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे, डॉ. कुलदीप एवं डॉ. शर्मिला भी रहे।

# महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय ने मनाया प्रथम वार्षिक खेल-कूद महोत्सव

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल के खेल विभाग द्वारा 28/03/2023 को प्रथम वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन विश्वविद्यालय के अस्थायी परिसर टीक में बड़े धूमधाम से किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी तथा मुख्य अतिथि के रूप में कैथल हरियाणा के सी.टी.एम श्री गुलजार अहमद उपस्थित रहे। माननीय कुलपति ने कहा कि खेल कुद युवाओं के लिए बहुत आवश्यक है। खेलकूद से शरीर एवं मन दोनों पुष्ट होते हैं। हमें विश्वास है कि एक दिन विश्वविद्यालय के छात्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेंगे। एक ओर हमारा विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत की रक्षा करेगा तो खेलकूद के द्वारा देश का नाम रोशन करेगा। मुख्य अतिथि ने कहा कि यह विश्वविद्यालय माननीय मुख्यमन्त्री के सपने को साकार कर रहा है। खेलकूद जीवन में उतना ही महत्व रखता है जितना पढाई। जबतक व्यक्ति का शरीर स्वस्थ नहीं होता तबतक दिमाग भी पुष्ट नहीं होता। युवा को नशा मुक्त होकर खेलकूद में अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए।

इस खेलकूद कार्यक्रम में कुल अट्ठारह प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 400 मीटर दौड़ (पुरुषवर्ग) में अंश (प्रथम), हरप्रीत (द्वितीय), मोहित (तृतीय) स्थान, 800 मीटर दौड़ (पुरुषवर्ग) मोहित शर्मा (प्रथम), मोहित (द्वितीय), अनीश(तृतीय) स्थान, 1500 मीटर दौड़ (पुरुषवर्ग) मोहित (प्रथम), हरप्रीत (द्वितीय), मुकुल (तृतीय), 200 मीटर दौड़ (महिला वर्ग) प्रियंका (प्रथम), पाखी (द्वितीय), मीनादेवी (तृतीय), 400 मीटर दौड़ (महिला वर्ग) मीना (प्रथम), कमलेश (द्वितीय), सोनिया (तृतीय), 4×200 मीटर रिले दौड़ (पुरुष वर्ग) मोहित शर्मा, मोहित, अनीश अंश (प्रथम), रोहित, राहुल, साहिल, संजय (द्वितीय), रजत, रवि, मुकुल, अजय (तृतीय), 4×100 मीटर रिले दौड़ (महिला वर्ग) प्रियंका, सोनिया, पाखी, मीना (प्रथम), अंजली, मुस्कान, सरोज, सुषमा (द्वितीय), कमलेश, पिंकी, पूजा, मानसी (तृतीय), गोला फेंक (पुरुष वर्ग) जगसीर (प्रथम), रविन्द्र (द्वितीय), अमरनाथ (तृतीय), गोला फेंक (महिला वर्ग) मीना (प्रथम), सोनिया (द्वितीय), पिंकी (तृतीय), लम्बी कूद (पुरुष वर्ग) भारत (प्रथम), मोहित (द्वितीय), अनिल (तृतीय), लम्बी कूद (महिला वर्ग) सुषमा (प्रथम), प्रियंका (द्वितीय), मानसी (तृतीय), ने प्रतियोगिताओं में भाग लेकर भिन्न-भिन्न स्थान प्राप्त किए।

खेल प्रशिक्षक कोच के रूप में डॉ. गुरमीत जिला प्रशिक्षक हरियाणा, डॉ. राजेश जिला प्रशिक्षक हरियाणा, डॉ. विजेन्द्र ढांडा विभागाध्यक्ष शारीरिक विभाग जनता कालेज काल, डॉ. भूपेंद्र बूरा क्रिकेट प्रशिक्षक, श्री प्रशान्त राय हैंडबाल प्रशिक्षक, श्री अमरजीत बॉक्सिंग प्रशिक्षक, श्री प्रदीप प्रशिक्षक महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय उपस्थित होकर छात्रों का सफल मार्गदर्शन किया। इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. विनयगोपाल त्रिपाठी खेल विभाग, सह संयोजक डॉ. देवेन्द्र सिंह, योगविभाग तथा संचालन डॉ. नवीन शर्मा ज्योतिष विभाग द्वारा किया गया । इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठातागण, विभागाध्यक्ष, अधिकारीगण, कर्मचारीगण, छात्रों तथा बाह्य दर्शक उपस्थित रहे एवं प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन किया।

## भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र
### (त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला)

दिनांक 14 अप्रैल 2023 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठापित भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन एवं प्रथम दिवसीय पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य किया गया। जिसमें पूर्व निर्धारित विषयों में से 1. भारत में रसायन विज्ञान 2. भारतीय गणितीय परम्परा 3. भारतीय भाषाओं का अंतः सम्बन्ध, विषयों का पाठ्यक्रम निर्माण किया गया। उद्घाटन सत्र में अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, (माननीय कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल), मुख्य-अतिथि प्रो. श्याम देव मिश्र (ज्योतिष विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जम्मू), सारस्वत-अतिथि प्रो. पवन कुमार शर्मा, (रसायन विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) एवं अन्य स्थानों से आमन्त्रित विद्वान उपस्थित रहें।

कार्यशाला के दूसरे दिन प्रथम सत्र में पूर्व निर्धारित विषयों में से 1. भारतीय भाषाओं का अंतः सम्बन्ध 2. भारतीय खगोल भौतिकी विज्ञान 3. भारतीय गणितीय परम्परा तथा दूसरे सत्र में 1. भारतीय तकनीकि ज्ञान : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 2. भारतीय राजनैतिक विज्ञान विषयों के पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार किया गया। पाठ्यक्रम निर्माण में प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज (माननीय कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल), प्रो. अशोक चन्द्र गौड (सेवानिवृत्त), डॉ. विजेन्द्र शर्मा (सह-आचार्य), डॉ. पुरुषोत्तम (सहायक-आचार्य) एवं डॉ. कृष्णानन्द दन्नाना (सहायक-आचार्य), प्रो. शत्रुघ्न त्रिपाठी (ज्योतिष विभाग, बनारस हिन्दू वि.वि., वाराणसी), प्रो. श्याम देव मिश्रा (ज्योतिष विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जम्मू), डॉ. मीनाक्षी (सहायक-आचार्या, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली), डॉ. कुलदीप सिंह (सह-आचार्य, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत वि.वि., राजस्थान), डॉ. नरेश शर्मा (विभागाध्यक्ष ज्योतिष विभाग एवं संयोजक, भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र), डॉ. नवीन शर्मा (सहायक-आचार्य) एवं डॉ. चन्द्रकान्त (सहायक-आचार्य, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल) ने पाठ्यक्रम निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन पर पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों 1. भारत की वैज्ञानिक परम्परा का इतिहास 2. भारतीय तकनीकि ज्ञान : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 3. भारतीय राजनैतिक विज्ञान 4. भारतीय भाषाओं का अंतः सम्बन्ध 5. भारत में रसायन विज्ञान 6. भारतीय खगोल भौतिकी विज्ञान 7. भारतीय गणितीय परम्परा 8. शुल्वसूत्रों पर आधारित ज्यामितीय गणित 9. प्राचीन भूगोल विज्ञान के पाठ्यक्रम निर्माण किया गया। समापन सत्र में अध्यक्ष प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज, (माननीय कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल), मुख्य-प्रो. प्रमोद कुमार भारद्वाज, (कुलसचिव, इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, मीरपुर, रेवाड़ी) तथा सारस्वत-अतिथि प्रो. मोहन दत्त शर्मा, (सेवानिवृत्त, गणित विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) विशिष्ट-अतिथि प्रो. शत्रुघ्न त्रिपाठी (ज्योतिष विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) उपस्थित रहे। त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के अवसर पर आमन्त्रित विद्वानों में प्रो. श्याम देव मिश्र, प्रो. ए. सी. गौड शास्त्री, डॉ. प्रवेश व्यास, डॉ. रश्मि, , डॉ. विजेन्द्र शर्मा, डॉ. मीनाक्षी, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. पुरुषोत्तम तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं शोध छात्र उपस्थित रहे।

# मेरा गाँव करोड़ा

**करोड़ा गाँव का इतिहास -** हरियाणा प्रदेश के जिला कैथल में कुल 7 ब्लाक शामिल हैं। जिसमें 4 तहसील और 3 उप-तहसील में कुल 278 गाँव है। जिले में करोड़ा गाँव एक बहुत बड़ा एवं प्रसिद्ध गाँव हैं। करोड़ा गाँव में जाट (बनवाला) समुदाय की बहुत बड़ी आबादी है। हमारा गाँव जिला मुख्यालय कैथल से 22 किलोमीटर दक्षिण की ओर स्थित है। गाँव की तहसील पूण्डरी एवं डाक घर पाई गाँव में है। हमारे गाँव से बाकल 4 किलोमीटर, रमाणा-रमाणी 4 किलोमीटर और सेरधा 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

**2011 के अनुसार जनगणना-** करोड़ा गाँव का क्षेत्रफल लगभग 30.81 किलोमीटर है। गाँव में लगभग 2053 परिवार निवास करते हैं। जनगणना के अनुसार इस गांव की कुल आबादी 11097 है। जिनमें 5975 पुरूष और 5122 स्त्रियाँ शामिल हैं। करोड़ा गाँव में 6 साल तक के बच्चों की आबादी 1399 है। गाँव की कुल शिक्षा दर 73.52% है, जिसमें पुरूष शिक्षा दर 75% व महिला शिक्षा दर 64.5% है।

**धार्मिक स्थल -** करोड़ा गाँव अपने मन्दिरों के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध है। जैसे - वैष्णों देवी मन्दिर, काली माता मन्दिर, शिव मन्दिर, हनुमान मन्दिर, गोगा माडी, दादा खेड़ा, आदि। लेकिन करोड़ा गाँव में बाबा रामनाथ मन्दिर व दादी सती मन्दिर अधिक प्रसिद्ध है। बाबा रामनाथ का मन्दिर बहुत प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर लगभग 400 से 500 वर्ष पुराना है। भाद्रपक्ष की सप्तमी को बाबा रामनाथ का मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु माथा टेकने के लिए आते है। मन्दिर में इस दिन विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। दादी सती मन्दिर यह मन्दिर गाँव का प्राचीन व सुन्दर मन्दिर है। यहां एक महिला सती हुई थी वह साधारण स्त्री नहीं थी। इनकी एक बड़ी कथा है पूरा गाँव जानता है भाद्रमास की पंचम के दिन इस मेले का आयोजन किया जाता है।

**शिक्षण संस्थान -** करोड़ा गाँव में दो सहकारी एवं तीन निजी विद्यालय स्थित है। जिसमें राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सत्य भारती, शिव पब्लिक स्कूल, गीतांजली पब्लिक स्कूल, करोड़ा आदि।

**मुख्य फसलें -** करोड़ा गाँव में गन्नें, गेहूँ और चावल फसलें उगाई जाती है। यहां की दो प्रमुख जातियां जाट और ब्राह्मण अधिकतर खेती पर ही निर्भर है यहाँ गन्ने की खेती भी की जाती है। लेकिन मुख्य रूप से गेहूँ और चावल ही उगाए जाते है।

**स्वास्थ्य केन्द्र -** गाँव में एक सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र भी है। जो बहुत बड़ा है जिसका निर्माण 15 से 20 वर्ष पहले हुआ था। इसके साथ-साथ यहाँ निजी स्वास्थ्य केन्द्र भी है जैसे - विनय हस्पताल, डॉ सचिन बनवाला क्लीनिक आदि।

**स्थानीय पार्क –** गाँव में भगत सिंह पार्क और माजरा नंद करन दो प्रमुख पार्क हैं जहाँ गाँव के बच्चे खेलते हैं और वृद्ध महिलाएँ सत्संग कीर्तन करती हैं।

**गांव की जातियां -** करोड़ा गाँव चार पट्टियों अर्थात चार वर्गों में बटां हुआ है जैसे - 1. मेहान पट्टी 2. पादड़ा पट्टी 3. बिल्ला पट्टी 4. पिनाणा पट्टी। फिर इन चारों पट्टियों में अनेक जातियों के लोग निवास करते हैं जैसे - जाट, ब्राह्मण, हरिजन, बाल्मीकि, कुम्हार, लोहार, बाढ़ी आदि अनेक जातियाँ है। लेकिन गाँव में अधिकतर जनसंख्या जाट जाति की है। करोड़ा गाँव की कुल जनसंख्या में 44% जाट, 30% ब्राह्मण, 11% हरिजन 10% वाल्मीकि तथा 5% अन्य दलित वर्ग निवास करते है।

**मोनिका, रेणु देवी, मनीषा**
**(आचार्य साहित्य- तृतीया)**

# होली

भारत विविधताओं का देश है। पूरे विश्व में भारत देश अपने त्योहारों को धूमधाम से मनाने के लिए प्रसिद्ध है, इसलिए भारत त्योहारों का देश भी कहा जाता है। यहां वर्ष भर अलग-अलग त्योहार बड़ी ही धूमधाम से मनाए जाते हैं। भारत में सभी धर्मों के लोग अपने-अपने त्योहार एक साथ मिलजुल कर मनाते हैं चाहें वह हिंदुओं की होली-दिवाली हो, मुसलमानों की ईद हो, सिखों की लोहड़ी हो या फिर ईसाइयों का क्रिसमस हो।

**पौराणिक कथा**-हिरण्यकश्यप त्रेता युग के शासक हुए जिसकी राजधानी ऐरच थी, जो बुदेलखण्ड में स्थित थी। भक्त प्रह्लाद के पिता हरिण्यकश्यप स्वयं को भगवान मानते थे। वह विष्णु के विरोधी थे जबकि प्रह्लाद विष्णु भक्त थे। उन्होंने प्रह्लाद को विष्णु भक्ति करने से रोका जब वह नहीं माने तो उन्होंने प्रह्लाद को मारने का प्रयास किया। प्रह्लाद के पिता ने अन्त में अपनी बहन होलिका से मदद मांगी। होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था। होलिका अपने भाई की सहायता करने के लिए तैयार हो गई। होलिका प्रह्लाद को लेकर जलती चिता में बैठ गई परन्तु विष्णु की कृपा से भक्त प्रह्लाद सुरक्षित रहे और होलिका जल कर भस्म हो गई। आज भी ऐरच में हिरण्यकश्यप का वो किला है जहां होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर जलने के लिए बैठी थी। यह कथा इस बात का संकेत करती है की बुराई पर अच्छाई की जीत अवश्य होती है। आज भी पूर्णिमा को लोग होली जलाते हैं, और अगले दिन सब लोग एक दूसरे पर गुलाल, अबीर और तरह-तरह के रंग डालते हैं। यह त्योहार रंगों का त्योहार है।

**भारत की विभिन्न प्रसिद्ध होलियाँ**- देश के विभिन्न हिस्सों में होली के जश्न के भिन्न-भिन्न दृश्य देखने को मिलते हैं, जिसे दुनियाभर से पर्यटक इस पर्व में शामिल होने के लिए भारत आते हैं। क्योंकि होली का त्योहार भले ही एक है किन्तु भारत के विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। जैसे-लट्ठमार होली (उत्तर प्रदेश), डोला होली (ओडिशा), फगुनवा (बिहार), बसंत उत्सव (पश्चिम बंगाल), शिगमो होली (गोवा), याओसांग (मणिपुर), खड़ी होली (उत्तराखंड), रंग पंचमी (महाराष्ट्र), मंजल कुली या उकुली (केरल), पकुवाह (असम), होला मोहल्ला (पंजाब) इत्यादि।

**ऐतिहासिक महत्व**- होली के दिन बुराई पर अच्छाई की जीत हुई थी इसलिए लोगों को इस त्यौहार से शिक्षा मिलती है कि चाहे बुराई कितनी भी बड़ी क्यों ना हो, हमेशा अच्छाई की जीत होती है इसलिए वह हमेशा अच्छे रास्ते को ही अपनाए।

**सामाजिक महत्व** – होली एक सौहार्दपूर्ण त्यौहार है। जिसमें लोग वर्षों पुरानी दुश्मनी, लड़ाई, झगड़ा भुलाकर एक दूसरे से गले मिल जाते हैं, इसीलिए इस त्यौहार को दोस्ती का भी प्रतीक कहा गया है। इस दिन समाज में कोई ऊंच-नीच नहीं देखता। सभी लोग एक दूसरे को गले लगा कर होली का त्यौहार मनाते हैं। इसे समाज में ऊंच-नीच की खाई कम होती है इसलिए यह त्यौहार सामाजिक महत्व भी रखता है।

**होली पर्व का वैज्ञानिक महत्त्व**- होली का त्योहार मनाने का एक और वैज्ञानिक कारण यह भी माना जाता है कि शरद ऋतु की समाप्ति और बसंत ऋतु के आगमन का यह काल पर्यावरण और शरीर में बैक्टीरिया की वृद्धि को बढ़ा देता है लेकिन जब होलिका जलाई जाती है तो उससे करीब 145 डिग्री फारेनहाइट तक तापमान बढ़ता है तथा परंपरा के अनुसार जब लोग जलती होलिका की परिक्रमा करते हैं तो होलिका से निकलता ताप शरीर और आसपास के पर्यावरण में मौजूद बैक्टीरिया को नष्ट कर शरीर तथा पर्यावरण को स्वच्छ करता है।

**सर्जन सिंह**
शास्त्री तृतीय वर्ष (दर्शन)

# पुत्राः

याज्ञवल्क्यस्मृतौ पुत्राणां सम्बन्धे कल्याणप्रद उपयोगानां चर्चा कृताऽस्ति। पुत्रोत्पत्तेः इच्छायाः तात्पर्यम् आसीत् कुलस्य अग्रे नयनं तथा तस्य अविच्छेद्यत्वकरणम् - 'वंशस्य अविच्छेदः' एवं धार्मिकाः संस्काराः तेषां नानाविधयः एवम् अग्निहोत्रानुष्ठान तथा अग्निहोत्रोदीनां रक्षमम् ।

पितृगणाः हृदयेन विचार्य आत्मभ्यः पुत्रमभिकाङ्क्षन्ते, ते आशां कुर्वन्ति यत् पुत्रः लघुऋणात् वा महद् ऋणात् एवं पितृ-ऋणेभ्यः विमुक्ति (निष्कृतिम्) वा प्रदास्यति।

**पुत्रस्य प्रकाराः** - 1. औरसः पुत्रः - विधिपूर्वकं विवाहिता स्त्रियां पुरुषः स्वयं यं पुत्रम् उत्पादयति सः पुत्रः 'औरसः' कथ्यते। 2. पुत्रिका पुत्रः - द्विविधः भवति।

❖ कोऽपि पुत्रहीन नरः स्वपुत्रीं पुत्रवत् नियोक्तुं शक्नोति। सा पुत्रिका अभिधीयते पुत्रवत् च मन्यते।

❖ अथवा सा अन्यस्मै इदम् उक्त्वा दीयते यदहम् इमां भ्रातृहीनां कन्याम् आभूषणैरलंकृतां त्वया सह परिणीतां (विवाहितां) करोमि। अस्याः उत्पन्नः पुत्रः मदीयो भविष्यति । अस्यां स्थित्यां दीयमानायाः कन्यायाः पुत्रः मातामहस्य पुत्रः भवति।

❖ पत्न्यां सगोत्रः अथवा अन्यदेवरादेः सपिण्डात् उत्पन्नः पुत्रः क्षेतजः अभिधीयते। क्षेत्रजोऽपि द्विधा विभक्तः क्रियते - गर्भदातुः पुत्र एवं पत्न्याः पत्युः पुत्रः तथा एवं विधः पुत्रः यः कुत्रापि सुत्पादितः।

3. गूढजः - याज्ञवल्क्यमतानुसारं गूढजः अथवा गूढत्पन्नः सः पुत्रः कथ्यते यः कस्यचिद् गृहे जन्म गृहणाति, किन्तु तस्य जन्मदातुः पितु वा संज्ञानं न भवति। इत्थं गुप्तरूपेण गृहे समुत्पन्नः, यस्याः स्त्रियाः उत्पद्यते तस्या एव पत्युः गूढजः पुत्र उच्यते।

4. दत्तकः - यं माता अथवा पिता संकटकाले एवं स्नेहावशात् स्वजातेः मनुष्याय जलेन संकल्पं कृत्वा प्रयच्छति, सः दत्तकः पुत्रः अभिधीयते।

5. क्रीतः - सः पुत्रः क्रीतः भवति यं पुत्ररुपेण उप्रीकर्तुं कोऽपि तस्य माताः पित्रोः क्रीणाति कामं स गुणै समानः अथवा असमानो भवेत्।

6. दत्तात्मा - दत्तात्मा पुत्रः सः भवति यः आत्मानं कस्यापि पुत्रं करोति।

रजनी (एम. ए.-हिन्दू अध्ययन)

## प्रश्नमञ्जरी

(१) 'नीतिशतकम्' के प्रणेता है-
(क) श्री राम शर्मा (ख) विष्णु शर्मा (ग) भर्तृहरि (घ) नरहरि।
(२) ऋग्वेद के प्राचीनतम भाष्यकार हैं-
(क) स्वामी दयानन्द (ख) सायण (ग) आत्मानन्द (घ) स्कन्दस्वामी ।
(३) 'भारतरत्न' की उपाधि से अलङ्कृत संस्कृत पण्डित है-
(क) डॉ. रघुवीर (ख) हरिशास्त्री
(ग) डॉ. पा. वा. काणे (घ) डॉ. रामनाथ सुमन।
(४) कल्पसूत्रों के अन्तर्गत नहीं है ?
(क) श्रोत सूत्र (ख) गृह्यसूत्र (ग) धर्मसूत्र (घ) कामसूत्र
(४) कालिदास की काव्य शैली है-
(क) गौड़ी (ख) वैदर्भी (ग) लाटी (घ) पांचाली
(६) कश्मीर के सर्वश्रेष्ठ विद्वान हैं-
(क) मम्मट (ख) अभिनव गुप्त (ग) कल्हण (घ) उत्पलाचार्य
(७) 'स्वामी नारायण' सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ है-
(क) केशवी शिक्षा (ख) नारायण शिक्षा
(ग) शिक्षा पत्री (घ) नारदीय शिक्षा
(८) वदाङ्ग है-
(क) 08 (ख) 06 (ग) 13 (घ) 07
(९) वेदांग नहीं हैं -
(क) निरुक्त (ख) कल्प (ग) योगशास्त्र (घ) व्याकरण
(१०) अष्टाध्यायी में सूत्र संख्या है -
(क) 3980 (ख) 3981 (ग) 3989 (घ) 3970

**(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)**

### (द्वादशङ्कस्य उत्तराणि)

(1) कौटिल्य (2) 07 (3) न्यायशास्त्र (4) कालिदास (5) सिद्धान्त कौमुदी
(6) श्रीधर भास्कर वर्णेकर (7) शुनःशेप (8) विश्वरथ (9) हरदेव बाहरी
(10) अम्बिकादत्त व्यास

## सुभाषितानि

**न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः,**
**वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।**
**धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति,**
**सत्यं न तद्यच्छलमभ्युपैति॥**

जिसमें वृद्ध पुरुष नहीं है वह सभा नहीं कहलाती है, जो धर्म न कहें वे वृद्ध नहीं हैं, जिसमें सत्य नहीं है वह धर्म नहीं है और वह सत्य नहीं है जो छल से युक्त है।

## गीता-ज्ञान

**अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।**
**यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥**
**कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।**
**तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥**

भावार्थ : सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। कर्मसमुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

## आदिशङ्कराचार्याष्टकम्

शिवः पिता यज्जनी शुभार्या गोविन्दपादश्च गुरुर्महात्मा।
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥१॥

जनिर्भवत्केरलराज्यमध्ये ग्रामो हि यस्य प्रियकालड़ी च।
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥२॥

पीठप्रतिष्ठा विहिता च येन प्रचारितं वैदिकवाङ्मयन्तत्।
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥३॥

वेदान्तसूत्रेषु कृता च टीका विधर्मिणो येन पराजिताश्च।
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥४॥

शास्त्रार्थमार्तण्डसनातनीयं विधर्मनाशे निरतं सुपूज्यम्।
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥५॥

धर्मध्वजारक्षणसारणं संकृतं सदा भारतभूमिभागे
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥६॥

अद्वैतवेदान्तमहत्प्रचारं समस्तविश्वे विहितञ्च येन
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥७॥

धर्मावतारं विबुधावतारं सिद्धावतारञ्च सुरावतारं
शिवस्वरूपं जगतो गुरुन्तं श्रीशङ्कराचार्यमहं नमामि ॥८॥

गुरुं श्रीशंकराचार्यं दिव्यं शङ्कररूपिणम्।
धर्मविग्रहवन्तन्तं सादरन्नौमि शाश्वतम् ॥

**डॉ.शशिकान्तशशिधरः**
विभागाध्यक्ष (दर्शनविभागः)

# महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा
(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

## पञ्जीकरण आरम्भ

### आचार्य (एम.ए.)

| | |
|---|---|
| वेद | दर्शन |
| व्याकरण | धर्मशास्त्र |
| ज्योतिष | योग (M.A.) |
| साहित्य | हिन्दू अध्ययन (M.A.) |

### शास्त्री प्रतिष्ठा (B.A. Honors) चार वर्षीय (NEP 2020)

| | |
|---|---|
| वेद | दर्शन |
| व्याकरण | धर्मशास्त्र |
| ज्योतिष | योग |
| साहित्य | |

### अंशकालीन पाठ्यक्रम (डिप्लोमा)

- योग
- आयुर्वेद
- ज्योतिष
- वास्तुशास्त्र
- संस्कृत भाषा दक्षता
- वैदिक-गणित
- वेद
- पौरोहित्य (कर्मकाण्ड)

### विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लाभ–

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम।
- क्षमता सम्वर्द्धन पाठ्यक्रमों का समावेश।
- रोजगार परक पाठ्यक्रमों का समावेश।
- कौशल सम्वर्द्धन पाठ्यक्रमों का समावेश।
- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों का अध्ययन।
- मूल्य योजना पाठ्यक्रमों का समावेश।
- हिन्दी व अंग्रेजी विषयों का भी पाठ्यक्रम।
- राजनीति, इतिहास वैकल्पिक विषय।
- शास्त्री प्रतिष्ठा करके प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठनें (I.A.S., I.P.S) का भी सुनहरा अवसर
- भारतीय सेना में धर्म शिक्षक (R.T./J.C.O) बनने का सुनहरा अवसर।
- चिकित्सा (द्विवर्षीय आयुर्वेद डिप्लोमा)
- संचार (सूचना–तकनीक)

### विशेष

विश्वविद्यालय में छात्र-छात्राओं के लिए छात्रावास एवं भोजनालय की व्यवस्था भी उपलब्ध है।

### विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करेः–

वेबसाइटः– www.mvsu.ac.in संपर्क–सूत्र– 93500–45366

### डिप्लोमा

आयुर्वेद (द्विवर्षीय)
शुल्क 10,000/– (प्रति वर्ष)

अन्य डिप्लोमा (एकवर्षीय)
शुल्क 6,000/–

### प्रवेश हेतु नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें

कार्यालय परिसर– डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय
जगदीशपुरा (अम्बाला रोड़, कैथल– 136027) एवं
नूतन परिसर– महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल,हरियाणा
टीक परिसर, कुरुक्षेत्र रोड़, टीक